

13, 1462. — 2) *kommen, herbeikommen, wiederkommen; kommen zu, in* (acc.): तत्र राम समागच्छ वरितम् MBh. in BENF. Chr. 23, 38. चरेद्वतमह-
त्वापि घातार्थं समागतः JĀG. 3, 252. गृध्राजः समागम्य राघवं वाक्यमब्र-
वीत् R. 3, 23, 4. 66, 6. समागता सैव दिवः MRĀKH. 171, 24. PAÑKĀT. 34, 20.
पक्षे ऽह्नि समागते R. 1, 32, 7. समागता जरा PAÑKĀT. III, 228. यावदहं
पुरीषोत्सर्गं कृत्वा समागच्छामि 34, 22. 88, 25. 211, 10. 221, 4. 229, 3. BRAH-
MA-P. 54, 12. VET. 2, 20. 12, 7. पाण्डवान् — समागम्युर्महावने MBh. 3, 461.
INDR. 2, 15. R. 1, 39, 10. वैदूर्यपर्वतं चैव नर्मदां च महानदीम् । समागतम् (!)
MBh. 3, 10307. सांकाश्यां ते समागम्य R. 1, 70, 7. 33, 20. PAÑKĀT. 100, 2.
तव गृहं समागमिष्यामि 235, 12. VET. 29, 8. — 3) *stossen auf, finden:*
क्व नु नाम वयम् — तं नरम् । समागच्छेम यो नस्तद्रूपमापादयेत्पुनः ॥ MBh.
1, 7873. षडिन्द्रियाणि विषयं समागच्छति वै यदा 3, 113. — *caus. Jmd*
(acc.) *zusammenführen mit* (instr. loc.): समागमय वैदेह्या रामम् R. 5, 6,
29. तां कैमुदीमिव समागमयेन्दु विम्बे VIKR. 34.

— अभिसमा 1) *zusammen herbeikommen:* इमानि च सर्वाणि भूतान्य-
भिसमागच्छति Nir. 12, 11. — 2) *zu Jmd* (acc.) *kommen* MBh. 11, 445.

— उद् 1) *in die Höhe gehen, aufgehen, sich erheben, aufschliessen;*
von Gestirnen VARĀH. BRH. S. 7, 19. 8, 1. शक्रस्योद्गम्य चरणं प्रस्थितो जन-
मेजयः MBh. 13, 330. PAÑKĀT. 47, 18. वातोद्गतेरेणु R. 1, 10, v. l. शालपोत
इवोद्गतः MBh. 3, 11690. 1, 5942; vgl. शालमिव प्रवृद्धम् 3, 15703. — 2) *her-*
ausgehen, hervorkommen, hervorbrechen, hinausgehen: उद्गपं तमसस्पर्श-
— सूर्यमग्नम् RV. 1, 50, 10. अचिरौद्गतपल्लव VIKR. 107. R. 6, 18. पत्नैरु-
द्गतैः R. 4, 63, 2. विप्रुष्ककण्ठोद्गतशीकराम्भम् R. 1, 15, v. l. उद्गतो रोमा-
ञ्चः Sch. zu AMAR. 36. उद्गताः पौरवधूमकेयः प्राणवन्कयाः RAGH. 7, 16.
VID. 94. BHART. 2, 29. AMAR. 91. तद्दर्शनोद्गतान्प्राणान् Bhāg. P. 4, 22, 3.
उद्गतानीव सत्त्वानि बभूवुः R. 2, 48, 1. उद्गत *aus dem Munde hervorge-*
kommen, vomirt AK. 3, 2, 47. H. 1493. — 3) *sich ausbreiten, sich ver-*
breiten: उन्नाम इत्युद्गतनामधेयः RAGH. 18, 19. — Vgl. उद्गत fig., उद्गम fig.,
कुलोद्गत.

— अभ्युद् 1) *sich ausbreiten, sich verbreiten:* महच्छाभ्युद्गतं यशः R. 4,
21, 7. भगवतः कीर्तिशब्दश्चेको लोके ऽभ्युद्गतः LALIT. Calc. 3, 3. — 2) *hin-*
aus — und Jmd (acc.) *entgegen gehen:* अभ्युद्गतास्त्वां वयमग्य सर्वे MBh. 1,
3572. — Vgl. अभ्युद्गम fig.

— प्रोद् *hervorragan:* पदच्छाप्रेद्गतोदग्रसपत्तगिरि KATHĀS. 26, 9.

— प्रत्युद् *hinaus — und Jmd* (acc.) *entgegen gehen* (zur Bewillkomm-
nung oder in feindlicher Absicht): समागतमभिप्रेत्य प्रत्युद्गम्य — । प्रणि-
पत्याभिवाच्येनं तस्युः प्राञ्जलयस्तदा ॥ MBh. 1, 6422. 16, 121. M. 2, 196.
R. 1, 9, 53. 67. प्रत्युद्गम्य तं धाता 2, 96, 33. 4, 33, 45. RAGH. 5, 2. KUMĀ-
RAS. 7, 52. BHĀG. P. 1, 11, 19. 13, 4. Gīt. 11, 10. प्रत्युद्गम्य रथं रिपोः । वि-
घ्नं सपितुमिच्छामि R. 6, 90, 6. med.: प्रत्युद्गच्छत ताम् MBh. 3, 1834. प्रत्यु-
द्गत mit act. Bed.: प्रत्युद्गताः (in feindlicher Absicht) केकयान् MBh. 6,
3503. mit pass. Bed.: पैरैः प्रत्युद्गतो ह्रस्वम् R. 1, 77, 8. RAGH. 2, 20. 12, 62.

— समुद् *hervorkommen, hervorbrechen:* समुद्गतस्वेद R. 1, 7.

— उप 1) *hinzukommen; herankommen an, hinzutreten zu, an einen*
Ort hingehen, gelangen zu; besuchen; erreichen, treffen: रथै दाश्यासमुप-
गच्छत्सम् RV. 1, 47, 3. 131, 7. 6, 82, 8. क्वामेकं त्रिपङ्क्तत्वा उ ॥ 10, 160, 5.
9, 67, 29. 92, 2. उताशितमुप गच्छति मृत्युवः 10, 117, 1. 2. 1, 33, 9. उप वा-
मवः शरणां गमिष्यम् 138, 3. CAT. Br. 2, 1, 4, 8. अग्रेः प्रियं धामोपगम्य 2, 2,

3, 4. 9, 1, 22. 14, 1, 13. प्रतिद्वयं कैवेनमुपगच्छति 14, 3, 1, 8. — उपगच्छे-
त्स्वयं च यः (पुत्रः) MBh. 1, 4673. 3, 2681. R. 3, 4, 32. Hit. 12, 14. ÇĀK. 28,
7. 78, 1. VID. 83. भार्यामयत्रोपगताम् MBh. 13, 2965. MEGH. 52. 98, v. l.
MĀLAY. 73. ÇĀK. 143. उपगम्युः पितामहम् MBh. 3, 8823. N. 21, 11. मामि-
वापगम्य DAÇAK. in BENF. Chr. 184, 21. सर्व एवैते पितामहमुपागमन् MBh.
1, 7683*. BENF. Chr. 26, 72*. यदैव मेनका दातायणीमुपगता ÇĀK. 111, 4.
रणाप्योपगम्य तम् MBh. 1, 5399. प्रकृस्तमुपगच्छति सारमेया इवामिषम्
herfallen über 11, 109. यन्मामधर्मोपागच्छत übel begegnen 8, 2082. स-
मीपं नोपागच्छामि 1, 6579. PAÑKĀT. 33, 11. Hit. 18, 16. मत्समीपमुपगतो
नासीत् ÇĀK. 82, 8. उपागमन् — गिरिनदीम् MBh. 3, 2537*. N. 21, 26*.
BHATT. 7, 32*. अथो ऽधो गङ्गेयं पदमुपगता स्तोत्रम् BHART. 2, 10. कृत्स्ने स्व-
धामोपगते Bhāg. P. 1, 3, 43. अस्तमुपगच्छति स भगवान्मृगाङ्कः MRĀKH. 46.
15. अस्तोपगतस्य भानोः R. 3, 48, 19. नरकयोपागच्छति (dat.!) MBh. 13,
3176. निवासोपगत 3, 944. ज्ञातकमुखोपागतान् (Sch.: = प्रविष्टान्) इन्दु-
किरणान् ÇĀC. 9, 39. einen best. Standpunkt erreichen (von Sternen) VARĀH.
BRH. S. 9, 26. नीचोपगता 32, 15. 41 (40), 3. तनयभवनमुपगतः 104, 27. 53. प्र-
जेशमापाठमिष्यते जपाकरोपागतं समीप्य 24, 4. तपो हि महविश्वो
विश्वामित्रमुपागमत् heimsuchen R. 1, 63, 8*. कस्याप्यतं सुखमुपगतं दुःख-
मेकाक्षतो वा Jmd (gen.) *widerfahren, begegnen* MEGH. 108. नरद्वयो ऽपि
समाप्राति देवाडुपगतं तृणम् sich darbielen PAÑKĀT. IV, 84. — 2) *an Et-*
was gehen, unternehmen: आशिष उपगच्छति CAT. Br. 4, 5, 2, 9. तपो धो-
रमुपागमत् R. 1, 63, 25*. — 3) *inire feminam:* सुप्तो मतो प्रमत्तो वा रूढो
यत्रोपागच्छति M. 3, 34. 4, 40. 41. शर्मिष्ठांमुपगमिष्वान् MBh. 1, 3458. —
4) *Jmd* (acc.) *zu Etwas* (acc.) *erwählen:* ये सनातनः पितरमुपागमत्स्वयम्
BHATT. 1, 1*. — 5) *in einen Zustand, ein Verhältniss treten, verfallen*
in, theilhaftig werden, erlangen: शुक्रतमुपगच्छति JĀG. 3, 71. वध्यव-
मुपगच्छतो मम MBh. 3, 13572. KUMĀRAS. 1, 8. प्रतिकूलतामुपगते हि वि-
धौ ÇĀC. 9, 16. निद्रावशमुपगतस्य PAÑKĀT. 126, 3. न तृप्तमुपगमन्तुः R. 4,
4, 19. शांतिम् 3, 9, 34*. प्रकर्षम् MBh. 1, 7346. अतुलो प्रीतिम् INDR. 3, 10.
संतापम् SĀV. 1, 4. पश्चात्तापम् ÇĀK. 79, 16. विषादम् Hit. 42, 15. भयम् PAÑ-
KĀT. 20, 4. नाशम् BHATT. 13, 92*. परा व्रीडाम् R. 1, 1, 80*. निद्राम् 33, 22*.
जीवितान्तम् 2, 64, 72*. परा बुद्धिम् MBh. 3, 261. पादन्यासो लयमुपगतः
MĀLAY. 29. संस्कारोपागता MBh. 1, 19. — 6) *einräumen, zugestehen, an-*
erkennen: स वै सर्वमवाप्नोति वेदातोपागतं फलम् M. 2, 160. दृष्टोपागत
MBh. 13, 2629. उपगत = प्रतिज्ञात u. s. w. AK. 3, 2, 58. — 7) *vom par-*
tic. उपगत erwähnen wir noch folgende Bedeutungen, welche sich oben
nicht bequem einfügen liessen: a) *angränglich, in der Nähe befindlich:*
उपगता दश येषाम् = उपदशाः beinahe zehn Vop. 6, 22. — b) *heimgegan-*
gen, todt H. 374. — c) *versehen mit* (instr.): कैवेनोपागतं मणिम् in Gold
gefasst MBh. 12, 1545. — *caus. herbeikommen lassen:* एनामुपगम्य DA-
ÇAK. 137, 18. — *desid. zu wandeln begehren:* तस्य महानुभावस्यानुपयम्
— कः — उपज्ञिगमिषति BHĀG. P. 5, 24, 26; vgl. उपज्ञिगमिषु (acc.) —
zu gehen wünschend MEGH. 43. — Vgl. उपग, उपगत fig., उपगामिन्
und oben — उपा, wohin die augmentirten Formen (durch * nach dem
Citat bezeichnet) gleichfalls gestellt werden könnten, da z. B. उपागमन्
auch in उप + आ + अगमन् zerlegbar ist.

— अभ्युप 1) *herbeikommen, hinzugehen, zu Jmd treten, gehen zu.*
nach: तत्तणादेवाभ्युपगम्यादित्यः प्रोवाच PAÑKĀT. 189, 24. अभ्युपगत